

# किसलय

बढ़ते कदम क्षितिज की ओर





# किसलय

## PURPOSIVE PEDAGOGICAL PRACTICES Vol. II



तत् त्वं पूषन् अपावृणु  
केन्द्रीय विद्यालय संगठन

केन्द्रीय विद्यालय संगठन (मु.), नई दिल्ली  
Kendriya Vidyalaya Sangathan (HQ), New Delhi



© Kendriya Vidyalaya Sangathan

किसलय-BEST PEDAGOGICAL PRACTICES

Special Publication on Foundational Literacy and Numeracy in Kendriya Vidyalayas across the country and abroad.

---

**PATRON**

Smt. Nidhi Pandey, Commissioner, KVS

**EDITOR**

Ms. Chandana Mandal, Joint Commissioner (Training), KVS (HQ)

**CO-ORDINATOR**

Dr. Ritu Pallavi, Assistant Commissioner (Training), KVS (HQ)

**EDITORIAL TEAM**

Smt. Ratna Pathak, PGT-English  
Smt. Meenaxi Ahlawat, PGT-English  
Shri Kamal Nayan Singh, PGT-Hindi

**DESIGNED BY:**

Publication Section

---

Published by Shri N.R. Murali, Joint Commissioner (Academics) on behalf of Kendriya Vidyalaya Sangathan.

---

Readers can send their Comments and suggestions through e-mail at: [actrgkvshq@gmail.com](mailto:actrgkvshq@gmail.com)

---

S. No.	Title	Page No.
	* संदेश	6
	* प्रवक्तृत्व	7
<b>भाषा शिक्षण- LANGUAGE TEACHING</b>		9
1.	मस्ती की पाठशाला: खेल, गीत व कला के द्वारा	11
2.	READING RENAISSANCE	13
3.	UNLEASHING THE MAGIC OF MUSIC	15
4.	GRAMMAR IS FUN!	16
5.	तस्वीर एक कविता है	18
6.	आओ सीखें खेल-खेल में	
<b>अनुभावात्मक अधिगम - EXPERIENTIAL LEARNING</b>		
7.	SCIENCE THROUGH STORIES	20
8.	NURTURING CREATIVITY	22
<b>प्रौद्योगिकी का उपयोग और समन्वय- TECHNOLOGY USE AND INTEGRATION</b>		
9.	REALITY REDEFINED	25
<b>गणितीय सोच -MATHEMATICAL THINKING</b>		
10.	ANGLES UNVEILED: A JOYFUL JOURNEY OF DISCOVERY	27
11.	MATHEMATICS THROUGH PATTERNS	29
12.	LEARNING MATHEMATICS THROUGH TOYS	31
13.	MATH MAGIC- MAKING MENTAL CALCULATIONS EASY	33
<b>भारतीय एवं स्थानीय संदर्भ- INDIAN AND LOCAL CONTEXT</b>		
14.	PICKLE IT! MANGOES ROUND THE YEAR	35
15.	MY CITY MY LEARNING TOOL	36
16.	FROM MARKET TO HOME	38
17.	LEARNING THROUGH FARMING	39
<b>आकलन- ASSESSMENT</b>		
18.	A SIMPLE RESEARCH WITH GREAT CHANGES- A TEACHER ON MOVE	41
<b>सर्वांगीण विकास- HOLISTIC DEVELOPMENT</b>		
19.	CULTIVATING NATURE'S SECRETS: EXPLORING THE WORLD OF SEEDS WITH JOY AND CREATIVITY	44
20.	THE DIFFERENCE A TEACHER CAN MAKE	46
21.	GROWING MINDS: CULTIVATING CURIOSITY AND JOY	48
<b>कला - समन्वय – ART-INTEGRATION</b>		
22.	कल्पना की उड़ान को पंख	50
<b>खेल-समन्वय अधिगम- SPORTS-INTEGRATED LEARNING</b>		
23.	TIPTOP THE MATHEMATICS	53
<b>समतामूलक और समावेशी शिक्षा- INCLUSIVE AND EQUITABLE EDUCATION</b>		
24.	LIGHTING THE WAY: A JOURNEY OF EMPOWERMENT FOR THE 'SPECIALLY-ABLED	55
<b>अनिवार्य अधिगम एवं आलोचनात्मक चिंतन - ESSENTIAL LEARNING AND CRITICAL THINKING</b>		58
25.	FLOURISHING FLOWERS	59
26.	LIGHTENING THE BAG	
<b>शिक्षक स्वायत्तता- TEACHER AUTONOMY</b>		
27.	FOR THE JOY OF READING	61
28.	GROWTH OF A TEACHER	63
<b>सामुदायिक भागीदारी - INVOLVING COMMUNITY</b>		
29.	SHARING IS CARING-THE FOOD WE EAT	66
<b>प्रारम्भिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा - ECCE</b>		
30.	FOSTERING THE TINY TOTS – BALVATIKA KIDS.	68
31.	A NEW BEGINNING WITH THE LITTLE ONES	70



## संदेश

किसी भी रचनात्मक कार्य को करने का सर्वोच्च पुरस्कार जो हो सकता है, वह है रचनात्मक होने का सुख और इस अनूठी पुस्तक को आपको सौंपते हुए मुझे उसी सुख का अनुभव हो रहा है। यह पुस्तक केवल एक दस्तावेज़ नहीं है जिसमें प्राथमिक शिक्षकों के नवाचारों को संकलित कर लिया गया है बल्कि यह रोमांच और नवोन्मेष की वे कहानियाँ हैं जहाँ कुछ शिक्षकों ने बच्चों के सहज सीखने के अनुभवों को देखकर अपनी शिक्षण विधियाँ ईज़ाद कर निश्चित परिपाटी को तोड़ा है। इन प्राथमिक शिक्षकों के अनुभवों को पढ़ना किसी रोमांचक चित्रकथा-सा ही है जहाँ हमारे नन्हें विद्यार्थी हँसते-मुस्कराते-गाते जीवंत पात्र बनकर कितने ही नाटकीय मोड़ ले आते हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अपने साथ एक नया खुशनुमा माहौल लेकर आई है। यहाँ शिक्षक-विद्यार्थी दोनों के लिए नए प्रयोग और रचनात्मक अनुभवों का एक ऐसा विस्तृत क्षेत्र है जहाँ नवाचार करना चुनौतीपूर्ण नहीं लगता बल्कि रोचक गतिविधि बन जाता है। भारत सरकार और शिक्षा मंत्रालय द्वारा आरंभ किए गए निपुण भारत मिशन की महत्वाकांक्षा को पूरा करना तथा FLN के उद्देश्यों को प्राप्त करना हमारा महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व है, इसके अंतर्गत हमारे शिक्षक और बच्चे दोनों ही स्वतंत्र होकर स्वाभाविक गतिविधियाँ कर रहे हैं तथा पहले से कहीं बेहतर अधिगम लक्ष्यों को प्राप्त भी कर रहे हैं।

वास्तव में आपके अलावा आपको कोई भी आपके बारे में नहीं सिखा सकता, इसलिए अपना गुरु और शिष्य आपको स्वयं बनना होगा और स्वयं से सीखना होगा। आप दूसरों से जो सीखते हैं वह सत्य नहीं है – श्री जिड्डु कृष्णमूर्ति जी का यह कथन आज के शिक्षण-अधिगम को पूर्णतः सार्थक करता है। केंद्रीय विद्यालय संगठन अपने मिशन के अनुसार शिक्षण के प्रत्येक आयाम को उत्कृष्टता तक पहुंचाने के लिए निरंतर प्रतिबद्ध है। 21 वीं सदी के भारत को उसकी प्रतिष्ठा के साथ स्थापित करने में इन शिक्षा के क्रांतिवीरों की महत्वपूर्ण भूमिका को पहचान मिले तथा भारत शिक्षा के माध्यम से 'नॉलेज सुपर पावर' बन कर उभरे, इन्हीं शुभाकांक्षाओं के साथ मैं इस पुस्तक से जुड़ी प्रत्येक प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष इकाई को उनके प्रयास के लिए साधुवाद देती हूँ।

**निधि पाण्डे**  
**आयुक्त**

## प्राक्कथन

यह प्रकाशन एक कहानी है उन सभी उत्सुक जागृत मानस स्वरूपों की जो शिक्षा और ज्ञान से विश्व को खुशहाल बनाना चाहते हैं- शिक्षा का खुशबाश शहर!

कथानक की पृष्ठभूमि और देशकाल एवं परिवेश को समझने के लिए स्मृति-यात्रा आरंभ करनी होगी तीन दशक पूर्व से- 1986 से 2020 तक देश और दुनिया की जो तरवीर बदली है, उसके संदर्भ में उपजी आकांक्षा और महत्वाकांक्षा को आकार देने के लिए राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अस्तित्व में आयी। कहानी में महानायक की भूमिका का निर्वहन करते हुए माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी की दूरदृष्टि और युगबोध ने इसकी पृष्ठभूमि तैयार की और 2015 में पूर्व कैबिनेट सचिव श्री टी.एस. आर. सुब्रमण्यम की अध्यक्षता में कार्य आरंभ हुआ। इस समिति की रिपोर्ट के आधार पर 2019 में पूर्व भारतीय अनुसंधान संगठन(इसरो) प्रमुख श्री कृष्णास्वामी कस्तूरीरंगन के नेतृत्व में राष्ट्रीय शिक्षा नीति के ड्राफ्ट को प्रस्तुत किया गया और फिर इन 484 पृष्ठों पर कई सार्वजनिक परामर्श हुए- ग्राम पंचायतों, ब्लॉक, शहरी स्थानीय निकायों और जिलों से सभी हितधारकों के लगभग 2 लाख से अधिक सुझाव प्राप्त हुए।

29 जुलाई 2020 को जब राष्ट्रीय शिक्षा नीति देश के समक्ष आई तो इसका मुख्य आकर्षण था। मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान। 'शिक्षा प्रणाली की सर्वोच्च प्राथमिकता प्राथमिक विद्यालय में सार्वभौमिक मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मकता प्राप्त करनी होगी'। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 के इस महत्वाकांक्षी उद्देश्य की प्राप्ति के लिए 'निपुण भारत मिशन' 2021 में प्रारंभ किया गया। केंद्रीय विद्यालय संगठन देश की सर्वोच्च शिक्षण संस्था है जो शिक्षा मंत्रालय और भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजनाओं को प्रगतिशील बनाने में सदैव अग्रणी रही है। केंद्रीय विद्यालय संगठन में FLN के इस अद्वितीय कथानक को इसके उत्कर्ष तक पहुँचाने का श्रेय माननीया आयुक्त महोदया को जाता है, जिनके ओजस्वी मार्गदर्शन में हम केंद्रीय विद्यालयों में बालवाटिका की स्थापना कर एवं प्राथमिक कक्षाओं की शिक्षण- पद्धति में महत्वपूर्ण परिवर्तन लाते हुए निपुण भारत के लक्ष्यों को प्राप्त करने हेतु निरंतर प्रयासरत हैं- इसी मिशन माध्यम की प्रणाली से हम मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान के शिक्षण हेतु कई उल्लेखनीय परिवर्तन ला रहे हैं- गतिविधि आधारित शिक्षण, खिलौना और खेल आधारित शिक्षण, कहानी-कथन और अनुभव एवं खोज आधारित ज्ञान इस क्रांतिकारी परिवर्तन के प्रमुख स्तंभ हैं।

हमारे शिक्षक और प्यारे बच्चे इस कहानी के प्रमुख पात्र हैं - और इस पत्रिका में आप प्रत्येक पृष्ठ पर उस नई पहल और नवाचार के परिदृश्य देखेंगे जो जल्दी ही भारत की शिक्षा प्रणाली में मूलभूत साक्षरता और संख्यात्मक ज्ञान को स्थापित करेगी।

किताबें बचपन का दर्पण हैं,  
एक ही आईने में निरंतर गढ़ते  
परिपूर्णता के दो अलंकरण हैं।



## गणितीय सोच Mathematical Thinking

4.25 यह माना जाता है कि गणित और गणितीय सोच भारत के भविष्य और कई आगामी क्षेत्रों और व्यवसायों में भारत की नेतृत्वकारी भूमिका के लिए बहुत महत्वपूर्ण होगी। इन उभरते हुए क्षेत्रों में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, मशीन लर्निंग और डेटा साइंस शामिल हैं। इस प्रकार गणित और कम्प्यूटेशनल सोच को विभिन्न प्रकार के अभिनव तरीकों के माध्यम से फाउंडेशनल स्तर से शुरू करके स्कूल की पूरी अवधि के दौरान विभिन्न तरीकों, जिनमें पहेलियाँ और गेम का नियमित उपयोग शामिल है जो गणितीय सोच को अधिक आनंददायी और आकर्षक बनाते हैं, के माध्यम से सिखाने पर जोर दिया जाएगा।

गणित की ख्याति एक ऐसे विषय के रूप में है जिससे सभी डरते हैं। यह डर तब और बढ़ जाता है जब इसे आनंदपूर्वक न समझा जाय। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 गणितीय सोच को छात्रों के प्रत्येक स्तर के लिए पहेलियों, खेलों आदि से रोचक बनाने को पक्षधर है। रटने की जगह समझाने की प्रक्रिया को हमारे केंद्रीय विद्यालय संगठन के गणित शिक्षकों ने एक चुनौती के रूप में लिया। विद्यार्थियों में गणितीय सोच को पुरख्ता करने के लिए हमारे शिक्षकों ने खेल - खेल में गणित सिखाना प्रारंभ किया। उन्होंने कोण पढ़ाने के लिए 'डिग्री क्लॉक' का प्रयोग किया तो पूरी कक्षा उसमें जोर-शोर से शामिल हो गई। फिर क्या था अंग्रेजी के वर्णों से लेकर आस - पास के भवनों तक में छात्र कोण ढूंढने में लग गए। शिक्षकों ने गणित को पैटर्न के माध्यम से समझाया तो योग की मुद्रा में भी बच्चों को गणित दिखाने लगा। ये पैटर्न यहीं नहीं रुका बच्चों ने संगीत और भवनों में भी पैटर्न देखने शुरू कर दिए। अब उन्हें गणित से डर नहीं लगता क्योंकि अब गणित तो खेलों में भी मिलने लगा है। बच्चों को जादूगर के जादू खूब भाते हैं। हमारे शिक्षक कहां पीछे रहने वाले थे, उन्होंने 'मैथ मैजिक' के माध्यम से जादू दिखाना शुरू किया तो बच्चे खुशी और रोमांच से झूम उठे। हमारे शिक्षक ब्लैकबोर्ड के अलावा अब 'इलेक्ट्रिक बोर्ड' से लेकर 'जियो बोर्ड' तक का प्रयोग कर के गणित की गणनाओं को बच्चों को समझाने में लगे हैं। तो आइए आपको दिखाते हैं ऐसे ही कुछ किस्से जिसमें गणित के 'भूत' को कैसे जादूगर बनकर 'छू-मंतर' से गायब करते हैं हमारे शिक्षक...





## 10

## Angles Unveiled: A Joyful Journey Of Discovery

Look at situations from all angles, and you will become more open.

This quote from Dalai Lama makes me explore new horizons as a teacher. Here I would like to share my experience while teaching the topic 'Angles' in Mathematics in class V. This topic was an exciting adventure that went beyond the confines of the classroom. With the aim of fostering curiosity and engagement, I carefully planned a captivating lesson using visual aids, an angle scavenger hunt, and hands-on angle construction activities. Let's dig into the thrilling experience of exploring angles with my young learners.

To pique the interest of my students, I decided to venture outside the classroom and employed various visual aids like a degree clock and an angle tester. These tools brought angles to life, making the topic easily relatable and fascinating for the students. I even incorporated an exciting angle scavenger hunt, a joyful twist on a classic game, where students explored their surroundings to identify acute, obtuse, and right angles. This approach ensured that learning about angles was not just theoretical but applicable in the real world.

To make the concept more relatable, I cleverly associated different letters of the English alphabet with specific angle types. Students enthusiastically co-related angles with familiar shapes, such as L for right angles and V for acute angles. Utilizing wall tubes to construct shapes during discussions added depth to their understanding, making the topic tangible and memorable.

With the foundations laid, I introduced the terms 'acute', 'right', and 'obtuse' angles and provided clear explanations for each. After a quick recapitulation, I encouraged students to define these angles independently. It was heartening and motivating to see the delight and wonder of my students.

Furthermore, I took learners to the school premises to play the game of angle scavenger hunt where the students looked for different types of angles. The excitement was palpable as the children embarked on their scavenger hunt. It was mesmerizing to witness them discovering angles in various nooks and corners of the school building. Now, my students can draw angles using a protractor. They have begun experimenting with adding and subtracting angles.

Overall, the activity not only reinforced their understanding of angles but also nurtured their ability to apply this knowledge practically in their surroundings. The engagement and participation displayed by the students affirmed the effectiveness of experiential learning in making the topic of angles come alive.

To ensure a solid grasp of the topic, I posed thought-evoking questions to my eager learners. Their ability to articulate definitions for acute, right, and obtuse angles showcased their growing understanding. They were able to identify the angles correctly. Witnessing their progress was truly awe-inspiring.

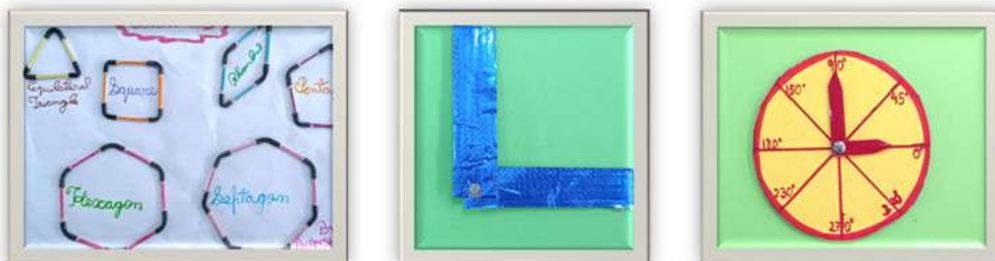
As the topic of Angles concluded, I felt satisfied with the successful execution of my planned activities. My students achieved a deeper understanding of angles in a joyful manner. They could classify angles correctly, identify real-life examples, and comprehend the connection between angle construction and measurement. The positive outcome has motivated me to continue planning future topics in similarly innovative ways.

As I reflect upon my experience, I am filled with joy and satisfaction. By planning a well-structured and engaging lesson that extended beyond the classroom, I successfully sparked curiosity and fostered a deeper understanding of angles. Seeing my young learners grasp these mathematical concepts with enthusiasm reaffirmed the power of joyful learning and exploration.

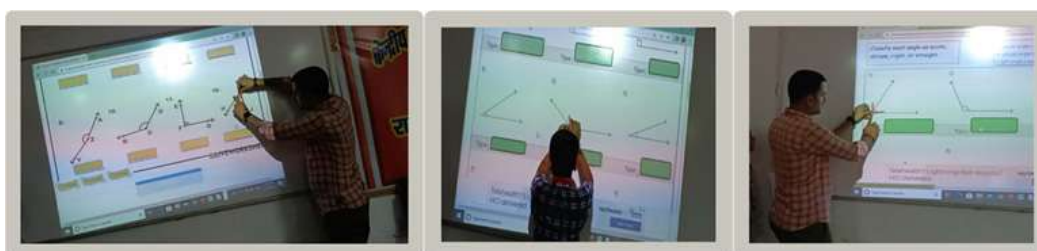


**Mr. Abhitesh Jangir**  
PRT, KV No. 1 GCF, Jabalpur

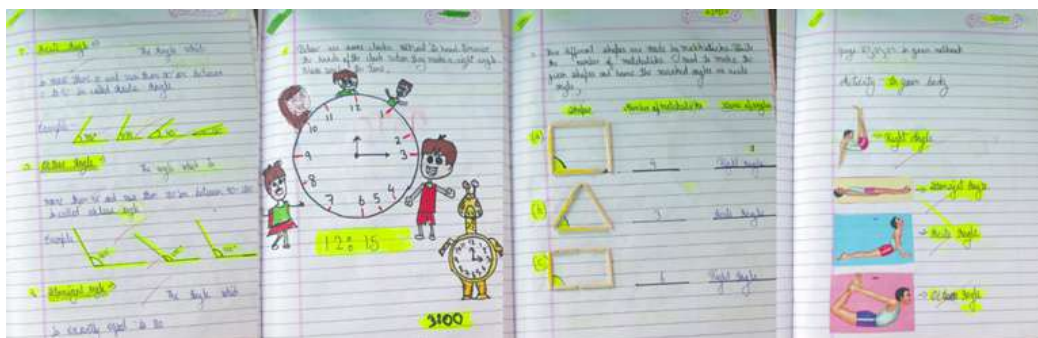
## Angles in Classroom



## Smart Class of Angles



## Classwork Of Students



## A Hunt for Angles

